कलियुग जलधि अपार, उद्ध अधरम्म उर्म्मिमय।
लच्छनि लच्छ मलिच्छ कच्छ अरु मच्छ मगर चय॥
नृपति नदीनद वृन्द होत जाको मिलि नीरस।
भनि भूषन सब भुम्मि घेरि किन्निय सुअप्प बस॥
हिन्दुवान पुन्य गाहक बनिक, तासु निबाहक साहि सुव।
बर बादवान किरवान धरि जस जहाज सिवराज तुव॥६१॥

शब्दार्थ—उद्ध = (सं० ऊर्ध्व) ऊपर उठा हुआ, प्रबल। उर्मिमय = लहर वाला। लच्छनि लच्छ = लक्षण-लक्ष, लाखों। कच्छ = कछुए। चय = समूह। सुअप्प = सुन्दर जल या अपना जल। निबाहक = सं० निर्वाह करने वाला, कर्णधार। सुव = सुत, पुत्र। बादवान = (फा०) नाव में कपड़े का पाल, जिसमें हवा भरने पर नौका चलती है। किरवान = सं० कृपाण, तलवार।

अर्थ—कलियुग रूपी अपार समुद्र है जो अधर्म की प्रबल तरंगों से युक्त है, लाखों मुसलमान ही जिसमें कछुए, मछली और मगर-समूह हैं, और जिसमें छोटे छोटे राजा-रूपी नदी नाले मिलकर नीरस हो जाते हैं (नदियाँ एवं नाले जब समुद्र में मिल जाते हैं तब उसका भी जल खारी हो जाता है), भूषण कहते हैं कि इस प्रकार कलियुग रूपी समुद्र ने समस्त पृथ्वी को घेर कर अपने जल के वश में कर लिया है (अर्थात् कलियुग रूपी समुद्र सारे संसार में फैल गया है) उस समुद्र में हिन्दू लोग पुण्य का (सौदा) खरीदने वाले बनिये हैं। हे शाहजी के

पुत्र शिवाजी ! आप ही उनको पार उतारने वाले (कर्णधार) हैं और तलवार-रूपी सुन्दर पाल को धारण करने वाला आपका यश उनका जहाज है।

विवरण—यहाँ कलियुग उपमेय में समुद्र उपमान का अभेद वर्णन किया है। दोनों में एकरूपता है। यहाँ समुद्र का पूर्णरूप—कलियुग-समुद्र; अधर्म-ऊर्मि; म्लेच्छ--कच्छ मच्छ और मगर; राजा-नदी नद; हिन्दुवान--पुण्यग्राहक व्यापारी; शिवाजी--कर्णधार; कृपाण-पाल; यश--जहाज वर्णित हैं; अतः अभेद रूपक है। इसे सांग रूपक भी कहते हैं क्योंकि इसमें सब अवयवों (अंगों) का वर्णन है।